स्त्री विमर्श के विविध आयाम

ज्योति कुशवाहा

बिलासा प्रकाशन

सशक्तिकरण के नाम पर जिस आज़ादी
इस पर भी विचार करना आवश्यक है।
बेटियों को क्या ऐसी आज़ादी दी जानी
हमारी परदादी, परनानी उस आज़ादी के
हिला सशक्तिकरण के नाम पर प्राप्त की
पहले यह पितृसत्तात्मक समाज का पुरुष
ुमारी दादी-नानी ही क्यों होती है? उन्हें
जीवन में नहीं कर पायी, उनकी पोतियाँ,
इती हैं। तब समझ में आता है कि महिला
नका अधिकार दिलाने में है ना कि किसी
ुत से प्रश्नों ने मुझे इस आलोचनात्मक
। किसी पुस्तक की उपयोगिता पाठकों से
य प्रतिक्रिया सादर अपेक्षित है।
सृजन रूपी महायज्ञ में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष
ोगी मित्रों, आलेख लेखकों को हृदय से
दृष्टि एवं सुंदर विचारों से हमें अभिभूत
की कल्पना निरर्थक सी प्रतीत होती है।
प्रश्नों ने मुझे इस सृजन (स्त्री विमर्श के
ूर समाधान पाएंगे। साथ ही इस पुस्तक
ओं की चर्चा की गई है, यह पुस्तक इस
। सहयोगी सिद्ध होगी....

- ज्योति कुशवाहा

अनुक्रम

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का नारी–अस्मिता की सुरक्षा में महत्त्वपूर्ण भूमिका 09
डॉ. सिकन्दर लाल

2. नारी संत साहित्य का समाज पर प्रभाव 15
डॉ०. वासुदेवन 'शेष'

3. देवदासी संप्रदाय : विभिन्न आयाम 21
डॉ०. चित्रा. वी. एस.

4. महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण हेतु भारत सरकार द्वारा उठाये गये कदम 25
डॉ. राजेश मौर्य / प्रो. डॉ. विजय सिंह राठौर

5. स्त्री विमर्श : विविध आयाम 35
अनिल कुमार

6. आध्यात्मिक भारत के निर्माण में नारी की भूमिका 42
रोशनी चन्द्राकर

7. बदलते परिवेश में स्त्री की दशा और दिशा 46
डॉ. विनीता कुमारी

8. मूकमाटी में स्त्री विमर्श 56
डॉ. विनय कुमार सिंह

9. वैदिक काल में नारी स्थिति 63
डॉ. सरोज कुमार गुप्ता

10. भारतीय राजनीतिक प्रक्रिया में महिलाएँ : बिहार के विशेष संदर्भ में (1919–2005) 70
जितेश कुमार मिश्रा

11. CONSTITUTIONAL AND LEGAL PROVISON OF WOMEN IN INDIA 75
Dr. ANIL KUMAR SHRIVATAVA

12. प्रथम भारतीय शिक्षिका युग निर्मात्री क्रान्ति ज्योति सावित्री बाई फूले 82
डॉ. आनंद यादव